International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

अंत्योदय का दर्शन

डॉ कमलेन्द्र कुमार
एम. ए., नेट, पीएचडी (दर्शन शास्त्र)

एकात्म मानव दर्शन तथा अन्त्योदय दर्शन का प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी हैं। इनका उद्देश्य भारतीय दर्शन एवं सनातन धर्म पर आधारित एक ऐसा स्वदेशी सामाजिक–आर्थिक म०डल प्रस्तुत करना था, जिसका केन्द्र मानव हो। भारत की स्वतन्त्रता से पहले देश में कई आन्दोलन हुए, कई प्रकार की नीतियाँ बनाई जाती थी, जगह–जगह विचार विमर्श किये जाते थे और इन सभी का एकमात्र लक्ष्य होता था– स्वतन्त्रता प्राप्त करना अथवा देश को स्वतन्त्र किस प्रकार कराया जाए। परन्तु जब देश स्वतन्त्र हो जाएगा तब देश संचालित किस प्रकार होगा, देशवासियों का विकास किस प्रकार होगा, मानव जीवन किस दिशा में अग्रसर होगा आदि पहलुओं पर किसी भी प्रकार का कोई विचार–विमर्श नहीं किया गया फलस्वरूप दिशाहीनता की स्थिति उत्पन्न हो गई।

देश में अंग्रेजो का शासन था अतएव उस समय भारतीय समाज में पश्चिमी सिद्धान्तों की बहुलता थी फिर चाहे वह सिद्धान्त साम्यवाद का हो अथवा पूँजीवाद का। पाश्चात्य सिद्धान्त मनुष्य के एकांगी विकास की बात करते हैं। इन पाश्चात्य सिद्धान्तों के विश्लेषण के बाद पंå दीनदयाल उपाध्याय जी ने सन् 1965 में वैदिक संस्कृति आधारित समग्र विकास की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसे ''एकात्म मानववाद'' अथवा ''एकात्म मानव दर्शन'' की संज्ञा दी गयी। पं दीनदयाल उपाध्याय जी के इस चिन्तन को अन्त्योदय के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। अन्त्योदय शब्द का उपयोग मूलरूप से ऐसे व्यक्तियों के विकास के लिये किया गया जो निर्धन हैं वांचित हैं, अथवा आर्थिक रूप से पिछड़ा है।

यह एक विचार नहीं, अपितु क्रियान्वयन की एक पद्धति है। पं दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि समाज में लागू की जाने वाली योजनाएं इस प्रकार की हों जिनसे पिछड़े लोगों का अधिकतम हित हो तथा जिन्हें रोजगार की जरूरत हो उन्हें रोजगार मिलें, उनका समग्र विकास हो। वर्त्तमान समय देश के विकास के लिये एकात्म मानव दर्शन अथवा अन्त्योदय अनिवार्य है। देश का समग्र विकास करने के लिये एक नवीन सिद्धान्त, दर्शन अथवा विचार की आवश्यकता थी, और इस आवश्यकता को पूर्ण किया सन् 1965 में पं दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानव दर्शन की अवधारणा प्रस्तुत करके। उन्होंने कहा– समाज में व्याप्त विभिन्न अवयवों के संयुक्त प्रभाव से उत्पादन होता है।

दीनदयाल उपाध्याय जी एक पत्रकार, अर्थशास्त्री, समाजसेवक और राष्ट्रसेवक थे। एक राष्ट्रसेवक के रूप में उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत देश सांस्कृतिक विविधताओं का देश हैं और ये सांस्कृतिक विविधताएं ही भारत देश की शक्ति है। हमारी संस्कृति केवल समाज और सृष्टि का ही नहीं, बल्कि अन्य चार तत्वों का समुच्चय है। उन्होंने कहा– हमारी संस्कृति मनुष्य के मन,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बुद्धि, आत्मा और शरीर का संयुक्त रूप है। उनका मानना था यदि संस्कृति के ये चारों अंग स्वस्थ रहेंगे, इनमें चेतना रहेगी तभी मानव सुखी रह सकता है, वह विकास कर सकता है तथा उसे वैभव की प्राप्ति हो सकती है। जब किसी मनुष्य के शरीर के किसी अंग में काँटा चुभता है तो मन को भी कष्ट होता है तथा बुद्धि हाथ को काँटा निकालने के लिये निर्देशित करती है तथा हाथ शरीर के उस हिस्से में पहुंचकर काँटे को निकालने का प्रयत्न करता है और यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों की स्वाभाविक प्रवृत्ति को पं दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने माना आत्मा, मन, शरीर धर्म, राष्ट्र. विश्व और ब्रह्मण्ड सभी एक दूसरे से सम्बन्धित है। यदि इनको अलग–अलग किया जाए तो ये जीवन के लिये अस्तित्वहीन है।

इन सबको अलग–अलग करके जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। उन्होंने इन सभी तत्वों को एक श्रृंखला के रूप में माना और कहा स्वस्थ आत्मा से स्वस्थ मन, स्वस्थ मन से स्वस्थ शरीर स्वस्थ शरीर से स्वस्थ धर्म, स्वस्थ धर्म से स्वस्थ राष्ट्र, स्वस्थ राष्ट्र से स्वस्थ विश्व तथा स्वस्थ विश्व से ही स्वस्थ ब्रह्मण्ड का निर्माण सम्भव है। ये सभी एक दूसरे के पूरक हैं, यदि कोई एक कडी खराब हो जाये तो इसका प्रभाव बाकी तत्वों पर भी पड़ेगा और यदि उस खराब कड़ी को ठीक कर दिया जाए तो बाकी चीजें भी अपने आप सही हो जाएगी।

पं दीनदयाल उपाध्याय जी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को ही अपना केन्द्र बिन्दु बनाया। उन्होंने कहा– हमारी संस्कृति काल विशेष तथा व्यक्ति विशेष के बन्धनों से मुक्त है। यह तो स्वतन्त्र व विकासशील जीवन की मौलिक प्रवृत्ति है। यह संस्कृति हमारे देश में धर्म का ही दूसरा रूप है। सामान्यतः धर्म से अर्थ मजहब, मत अथवा पंथ से लिया जाता है, परन्तु दीनदयाल जी के अनुसार भारत के धर्म प्रधान होने का अर्थ– भारत की संस्कृति से है। यह संस्कृति भारत की आत्मा है, और यदि भारत की आत्मा को समझना है, तो उसे राजनीतिक, आर्थिक अथवा सामाजिक दृष्टिकोण से नहीं अपितु सांस्कृतिक नजरिये से देखने की आवश्यकता है।

पं दीनदयाल जी पाश्चात्य संस्कृति के पक्षधर नहीं थे तथा पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण के घोर विरोधी थे। पश्चिमी संस्कृति में मनुष्य के राजनैतिक पशु की संज्ञा दी गयी, जिससे दीनदयाल जी पूर्णतः असहमत थे। उनका मानना था कि पश्चिमी तकनीक को अपनाओ यह विकास में सहायक है, परन्तु पश्चिमी संस्कृति से दूर रहो, क्योंकि यह मानव कल्याण के लिये नहीं, अपितु मानव की अवनति के लिये है। यह एकांगी विकास के लिये है और जब तक मानव का समग्र विकास नहीं होगा तब तक सुख शान्ति की कल्पना करना भी सम्भव नहीं।

उन्होंने कहा– हमारी आत्मा ने अंग्रेजी राज्य के प्रति विद्रोह केवल इसलिए नहीं किया कि दिल्ली में बैठकर राज करने वाला एक अंग्रेज था अपितु इसलिए किया कि हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में, हमारे जीवन की गति में विदेशी पद्धतियाँ, विदेशी रीति–रिवाज, विदेशी दृष्टिकोण और आदर्श अड़ंगा लगा रहे थे। हमारे सम्पूर्ण वातावरण को दूषित कर रहे थे। हमारे लिये सांस लेना भी दूभर हो गया था। आज यदि दिल्ली का शासनकर्ता हममें से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ही एक है, हमको इसका हर्ष है, संतोष है। किन्तु हम चाहते हैं कि उसकी भावनाएँ तथा कामनाएँ भी हमारी भावानाऐं तथा कामनाएं हो, जिस देश की मिट्टी से उसका शरीर बना है, उसके प्रत्येक राजकण का इतिहास उसके कण–कण से प्रतिध्वनित होना चाहिए।

एकात्म मानव दर्शन के अनुसार सरकार को केवल उन्हीं मामलों में हस्तक्षेप करना चाहिए, जिनमें समाज या व्यक्ति हस्तक्षेप नहीं करना चाहता शिक्षा का कर्म सेवाभाव से सम्बन्धित है, तथा शिक्षक का कार्य है, समाज को दिशा प्रदान करना। पं दीनदयाल जी शिक्षा का सरकारीकरण करने के पक्ष में नहीं थे, वे चाहते थे शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार हो ताकि समाज अधिकारों तथा कर्तव्य के प्रति जागरूक हो सके।

पं दीनदयाल जी के अनुसार ‘‘देश व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है, जो एक लक्ष्य, एक आदत तथा एक मिशन के साथ जीता है, और धरती के एक टुकड़े को मातृभूमि के रूप में देखता है। यदि आदर्श और मातृभूमि दोनों में से कोई एक भी नहीं है तो इन दोनों का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। भारत में प्रत्येक कर्म को धर्म मानकर किया जा रहा है, और यही समाज की स्वाभाविक स्थिति है।

उन्होंने कहा– हमारी आत्मा ने अंग्रेजी राज्य के प्रति विद्रोह केवल इसलिये नहीं किया, कि दिल्ली में बैठकर राज्य करने वाला एक अंग्रेज था अपितु इसलिये किया कि हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में, हमारे जीवन की गति में विदेशी पद्धतियाँ, विदेशी रीति–रिवाज, विदेशी दृष्टिकोण और आदर्श अड़गा लगा रहे थे। हमारे सम्पूर्ण वातावरण को दूषित कर रहे थे। हमारे लिये सांस लेना भी दूभर हो गया था। आज यदि दिल्ली का शासनकर्ता हममें से ही एक है, हमको इसका हर्ष है, संतोष है। किन्तु हम चाहते हैं कि उसकी भावनाएँ तथा कामनाएँ भी हमारी भावानाऐं तथा कामनाएँ हों, जिस देश की मिट्टी से उसका शरीर बना है, उसके प्रत्येक राजकण का इतिहास उसके कण–कण से प्रतिध्वनित होना चाहिये।

‘‘एकात्म मानव दर्शन‘‘ राष्ट्रत्व के दो परिभाषित लक्षणों को पुनर्जीवित करता है। पहला चिति (राष्ट्र की आत्मा) तथा दूसरा विराट् (वह शक्ति जो शब्द को ऊर्जा प्रदान करें)। एकात्म मानव दर्शन के अनुसार सरकार को केवल उन्हीं मामलों में हस्तक्षेप करना चाहिये, जिनमें समाज या व्यक्ति हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। शिक्षा का कर्म सेवाभाव से सम्बन्धित है, तथा शिक्षक का कार्य है, समाज को दिशा प्रदान करना। पंå दीनदयाल जी शिक्षा का सरकारीकरण करने के पक्ष में नहीं थे वे चाहते थे शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार हो ताकि समाज अधिकारों तथा कर्तव्य के प्रति जागरूक हो सकें।

पं दीनदयाल उपाध्याय जी ने समग्र विकास पर चिन्तन किया और उनके चिन्तन को अन्त्योदय के नाम से याद किया जाता है। वे मानते थे. जब तक निर्धनों, वांचितों तथा पिछड़े लोगों का आर्थिक विकास नहीं किया जायेगा, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जायेगी। तब तक देश का समग्र विकास सम्भव नहीं है। अन्त्योदय एक विचार नहीं है, एक पद्धति है। जिसका क्रियान्वयन होना आवश्यक है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पं दीनदयाल जी के अनुसार प्रत्येक भारतवासी हमारे रक्त और मांस का हिस्सा है। हम तब तक चौन से नहीं बैठेंगे जब तक हम हर एक आभास न करा दें, कि वह भारत माता की संतान है द्य हम इस धरती को सुजला–सुफला, अर्थात फल–फूल धन–धान्य से परिपूर्ण बनाकर ही रहेंगे।'' देश में पिछड़े वर्गों की आर्थिक सहायता के लिये दो प्रकार के सिद्धान्त प्रचलित हैः–

(1) रिसाव सिद्धान्त **(2) अन्त्योदय**

रिसाव सिद्धान्त, पूँजीवादी सिद्धान्त से मिलता जुलता है। जिसमें उच्च वर्ग यदि कोई बड़ा कार्य करता है, तो समाज के निम्न वर्ग को रोजगार मिलता है। या निम्न वर्ग किसी किसी रूप में लाभान्वित होता है। परन्तु इसके लिये उच्च वर्ग को अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। दूसरा सिद्धान्त है ''अन्त्योदय जो एकात्म मानव दर्शन की आधारशिला है। इसके अनुसार जिसको जितनी आवश्यकता है उसे उतनी जल्दी तथा उतनी मात्रा में लाभ दिया जाये । अर्थात् सरकार जो योजनाएँ चलाती है, चाहे अल्पकालीन हों अथवा दीर्घकालीन पहले वे योजनाएँ लागू की जाये, जिनमें निर्धन तथा वांचित लोगों को अधिकतम लाभ हो, उनका हित हो, उनको रोजगार मिले, तथा देश समग्र विकास हो। यही क्रियान्वयन पद्धति अन्त्योदय है।

हम अक्सर देखते है, समाज के निम्न वर्ग अथवा आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्ति रोजगार की तलाश में गांवों से शहरों की तरफ और छोटे शहरों से बड़े शहरों की तरफ पलायन करते है। फलस्वरूप शहरों का विस्तार हो रहा है और गाँव धीरे–धीरे संकुचित हो रहे है। यदि सरकार द्वारा कुछ उद्योग गाँवों में स्थापित कर दिये जायें, और शहरों में मिलने वाली सुविधाएं, जो लोगों को आकर्षित करती हैं, गाँवों में ही मुहैया करायी जायी, जैसे– पानी. बिजली विद्यालय, अस्पताल आदि तो यह पलायन रोका जा सकता है, तथा गाँव–शहर तथा समाज में समन्वय स्थापित किया जा सकता है। यही विचार अन्त्योदय है। देश तथा समाज के अन्तिम व्यक्ति तक विकास की किरण पहुंचाना तथा देश का समग्र विकास करना एकात्म मानव दर्शन तथा अन्त्योदय' का मूल उद्देश्य था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एकात्म मानव दर्शन तथा अन्त्योदय के आदर्श तथा विचार अधिक प्रासंगिक है। भारत और भारतीयता के संवाहक और संचारक के रूप में पå दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानवदर्शन तथा अन्त्योदय के विचार आज भी वास्तविकता तथा व्यावहारिकता के धरातल पर एक वटवृक्ष के समान बेहद मजबूती से टिके नजर आते हैं।

दीनदयाल अन्त्योदय योजनाः–

दीनदयाल अंत्योदय योजना का उद्देश्य योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। मेक इन इंडिया कार्यक्रम के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामाजिक तथा आर्थिक बेहतरी के लिए कौशल विकास आवश्यक है। दीनदयाल अंत्योदय योजना को आवास और शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय (एच.यू.पी.ए.) के तहत शुरू किया गया था। यह योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एन.यू.एल.एम) और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर. एल.एम) का एकीकरण है। राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन एन.यू.एल.एम. को दीन दयाल अंत्योदय योजना – डी. ए.वाई. एन यू.एल. एम. और हिन्दी में राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन नाम दिया गया है।

दीन दयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के घटक इस योजना में दो घटक हैं, एक ग्रामीण भारत के लिए तथा दूसरी शहरी भारत के लिए दीनदयाल अंत्योदय योजना के रूप में नामित शहरी घटक को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय (एच.यू.पी.ए.) द्वारा लागू किया जाएगा। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना के रूप में नामित ग्रामीण घटक को ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा लागू किया जाएगा।

इस योजना के तहत शहरी क्षेत्रों के लिए दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना के अंतर्गत सभी 4041 शहरों और कस्बों को कवर कर पूरे शहरी आबादी को लगभग कवर किया जाएगा। वर्तमान में सभी शहरी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में केवल 190 कस्बों और शहरों को कवर किया गया है। योजना का लक्ष्य शहरी गरीब परिवारों कि गरीबी और जोखिम को कम करने के लिए उन्हें लाभकारी स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार के अवसर का उपयोग करने में सक्षम करना, जिसके परिणामस्वरूप मजबूत जमीनी स्तर के निर्माण से उनकी आजीविका में स्थायी आधार पर सराहनीय सुधार हो सके। इस योजना का लक्ष्य चरणबद्ध तरीके से शहरी बेघरों हेतु आवश्यक सेवाओं से लैस आश्रय प्रदान करना भी होगा। योजना शहरी सड़क विक्रेताओं की आजीविका संबंधी समस्याओं को देखते हुए उनकी उभरते बाजार के अवसरों तक पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त जगह संस्थागत ऋण और सामाजिक सुरक्षा और कौशल के साथ इसे सुविधाजनक बनाने से भी संबंधित है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

- कुलकर्णी, शरद अनन्तः 1991, द्वितीय संस्करण पं दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, खण्ड–4, सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- जैन किशल चन्द्रः 1976 'शैक्षिक संगठन प्रशासन एवं पर्यवेक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी, जयपुर
- जोग, बलवन्त नारायणः 1991, पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन'' खण्ड–6, सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- ऑबेराय, सुरेश चन्द्र 2005 शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन, आर लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर क०लेज मेरठ–250001
- कपिल एच0के0:2007 तेरहवां संस्करण, अनुसंधान विधियाँ एचपी भार्गव बुक हाउस कचहरी घाट, आगरा–282005
- गर्ग, पंकज कुमारः2006 (मार्च–अप्रैल0) अंक–69. दयाल पत्रिका पं दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि). मेरठ–250001
- जोगेन्द्र भाई जीतः 1977 शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा– 282002
- लाल, रमन बिहारीः 2003 पन्द्रहवाँ संस्करण 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ–250002